# पहेली-उत्पत्ति एवं विस्तार

✧ डॉ. महाश्वेता शर्मा

पहेली की उत्पत्ति सृष्टि के साथ ही हुयी होगी। वैदिक काल में अश्वमेध आदि यज्ञों के अवसर पर पहेली अनुष्ठान का एक आवश्यक अंग समझी जाती थी। उस काल में पहेली को ब्रह्मोदय या ब्रह्मोद्य कहा जाता था। वैदिक ऋषियों ने रूपक आदि अलंकारों का आश्रय लेकर ऐसी अनेक ऋचाओं की रचना की है जो अर्थ की दुर्बोधता के कारण रहस्यात्मक बन गई हैं और पहेली के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होती हैं। पहेली के रूप में ऋग्वेद का निम्न मंत्र अत्यन्त प्रसिद्ध है –

***pRokfj J`xk =;k vL; ikn}s 'kh"k lIr gLrk lk·L;A f=/kk c)k o"kHkk jkjohfr& _Xon 4@58@3***

उपर्युक्त मंत्र के अनुसार इस देव के चार सींग, तीन पैर, दो सिर तथा सात हाथ हैं। यह बलवान देव तीन स्थानों पर बंधा हुआ शब्द करता है। इस मंत्र के कई विद्वानों ने भिन्न–भिन्न अर्थ किये हैं। यह मंत्र आज भी एक पहेली ही बना हुआ है। जिसका अभिप्राय समझने के लिय आज तक विद्वान एकमत नहीं हैं।

पहेली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के 'प्रहेलिका' शब्द से हुई है। संस्कृत शब्दकोश शब्द कल्पद्रुम के अनुसार प्रहेलिका का अर्थ है–'' प्रहिलति अभिप्रायं सूचयतीति प्रहेलिका'' अर्थात् पहेली का प्रयोग अभिप्राय को सूचित करने के अर्थ में होता है। यदि प्रकृति–प्रत्यय विश्लेषण की दृष्टि से इस उत्पत्ति पर विचार किया जाय तो प्रहेलिका शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'हिल्' धातु से बनता है जिसके अन्त मैं क्वुन प्रत्यय का प्रयोग किया गया है। ( प्र + हिल् + क्वुन) हिल् धातु का प्रयोग अभिप्राय सूचन के लिए होता है। 'टापि अत् इत्वम्' अर्थात् स्त्रीलिंग होने के कारण ल् में इ का आगम हो जाता है और प्रहेलिका शब्द सिद्ध हो जाता है। प्रहेलिका के अन्य पर्याय निम्नानुसार है –

***nfoKkukFk i;'u%] dVkFk Hkkf"krk dFkkA g;kfy bfr Hkk"kk] rRi;k;% iofYgdk AA***

शब्द कल्पद्रुम अपनी परिभाषा को और अधिक स्पष्ट करते हुऐ लिखता है –

***0;DrhdR; deI;Fk] Lo:ikFkL; xkiukrA ;= ckg;kUrjkoFkk] dF;r lk igfydk AA ½1½***
***lk f}/kkFkh p 'kkCnh p fo[;krk i;'u 'kkluA vkFkh L;knFkfoKkukr 'kkCnh 'kCnL; HkM-xr % AA***

अपने वास्तविक अर्थ को छिपाने के कारण, किसी अन्य ही अर्थ को अभिव्यक्त जो करे, उसे प्रहेलिका कहते हैं। यह अन्य अर्थ बाहरी और आन्तरिक दोनों प्रकार का हो सकता है। यह प्रहेलिका ''शब्द की प्रधानता से शाब्दी और अर्थ वैचित्र्य की प्रधानता से आर्थी'' दो प्रकार की होती है।

शाब्दी प्रहेलिका का संस्कृत में उदाहरण इस प्रकार है –

***lnkfje/;kfi u ofj;Drk furkUr jDrkI;fl ro fuR;eA***
***;FkkDr okfnU;fi uo nrh dk uke dkUrfr fuon;fUr AA***

इस पहेली का उत्तर सारिका है जो सदा अरि (पिंजरा) के मध्य रह कर भी शत्रुयुक्त नहीं है, जो नितान्त रक्त (प्रेमयुक्त) होकर भी काली है तथा जो यथोक्तवादिनी होकर भी दूती नहीं है। इस शाब्दी पहेली में शब्द वैचित्र्य के साथ मनोंरजन और बुद्धि व्यापाम का भी सम्मिलन है।

आर्थी प्रहेलिका का उदाहरण निम्नलिखित है–

***r:.;kfyfMxr% d.B furEcLFkyekfJr%A x:.kk lfUu/kku·fi d% dtfr egeg % AA***

अर्थात् तरूणी के कण्ठ का आलिंगन किए, नितम्ब का आश्रय लिए, गुरूओं के समीप स्थित होने पर भी यह कूजन कौन कर रहा है? इस पहेली का उत्तर जलकुम्भ है।

दण्डी ने अपने ग्रन्थ काव्यादर्श में प्रहेलिका को एक चित्रालंकार माना है। उनके अनुसार क्रीड़ा रूप गोष्ठियों में, प्रमोद में, पहेली समझने वाले विदग्ध जनों के समाज में भी गुप्त संभाषण करने के माध्यम के रूप में एवं दूसरों को व्यामोहित करने के साधन के रूप में पहेली उपयोगी होती है। दण्डी पहेली के तीस भेदों का संकेत करते हैं जिनमें से चौदह भेद दुष्ट हैं तथा सोलह भेद शिष्ट हैं जिनके नाम हैं–समाहिता, बंचिता, व्युत्क्रान्ता, प्रमुषिता, समानरूपा, परूषा, संरव्याता, प्रकल्पिता, नामान्तरिता, निभृता, समानशब्दा, संमूढ़ा, उभयच्छन्ना, संकीर्णा, परिहारिका एवं एकच्छन्ना। दण्डी ने शेष चौदह दुष्ट भेदों का नाम नहीं लिखा है। संभवतः वे ग्राम्य या अश्लील कोटि की पहेलियाँ रही होंगी। (2)

विष्णु धर्मोत्तर पुराण के तीसरे खण्ड के सोलहवें अध्याय में भी प्रहेलिकाओं का वर्णन है किन्तु वहां पहेली की कोई सुस्पष्ट परिभाषा नहीं दी गई है। इसे काव्यदोष से भिन्न मानकर उसकी प्रशंसा अवश्य की गई है। उसके अनुसार पहेली अश्लील नहीं होनी चाहिए क्योंकि अश्लील बन्ध उद्वेजनीय होता है। इस पुराण में पहेली के 22 प्रकार लक्षण सहित वर्णित हैं। (3)

पंचशील नगर, गली नं. 1, सिविल लाईन, दतिया ( मध्यप्रदेश )

साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ ने पहेली को अलंकार न मानते हुऐ एक अलग ही काव्यविधा माना है। वे कहते हैं –

**jlL; ifjifUFkRokr ukydkj% igfydkA mfDr ofp«; ek= lk P;rnÙkk{kjkfndkAA**

अर्थात् पहेली को अलंकार मानना उचित नहीं है क्योंकि यह काव्यात्माभूत रस में बाधा ही उत्पन्न करती है। पहेली के तीन भेद च्युताक्षरा, दत्ताक्षरा एवं च्युतदत्ताक्षरा अधिक से अधिक उक्ति वैचित्र्यमात्र ही कहे जा सकते हैं। (4) यथा–

**dtfUr dkfdyk% lky] ;kou QYyeEcqteA fd djkr djxk{kh] onuu fuihfMrkAA**

साल पर कोयलें कूक रही हैं। यौवन में कमल खिले हुए है। यह मृगनयनी, जो वदन से निपीड़ित है, क्या करे? इस पद्य में रसाले (आम) के स्थान पर साले का प्रयोग होने से च्युताक्षरा हैं। वने के स्थान पर यौवनें का प्रयोग होने से दत्ताक्षरा है तथा मदनेन (काम से) के स्थान पर वदनेन प्रयोग होने से च्युतदत्ताक्षरा है। इनके अनुसार पहेली के अन्य भेद क्रियागुप्ति, करकगुप्ति आदि हैं। अमरकोश में पहेली को प्रवल्हिका कहा गया है इसके अन्य नाम प्रश्नदूती एवं विपादिका भी कहे गए हैं। उदाहरण इस प्रकार है–

**ikuh; ikrfePNkfe RoÙk% deyykpuA ;fn nkL;fl uPNkfe u nkL;fl fickE;geAA**

इस पद्य में दास्यसि पद का एक अर्थ है तुम दासी हो (दासी असि) तथा दास्यसि पद का दूसरा अर्थ है–'दोगी'। अमर कोश की टीका में ही हिन्दी की एक पहेली निम्नानुसार उद्धृत की गई हैं–

**lkjh yxMh ty xb] tyk u ,dk rkxkA ?kj dk yMdk Ql x,] ?kj f[kMdh lkHkkxkAA ¼5½**

भामह ने काव्यालंकार में पहेली को परिभाषित करते हुए लिखा है–

**ukuk /kkRoFkZxEHkhjk] ;ed 0;inf'kuhA igfydk lk g;fnrk] jke'kek P;rkÙkjAA**

इनके अनुसार पहेली का स्वरूप नाना धात्वर्थ गम्भीरा है अर्थात् कई धातुओं के कई प्रकार के अर्थ होने के कारण जो गम्भीर हे एवं यमक व्यपदेशिनी है। इस प्रकार भामह भी यह प्रहेलिका को अलंकार मात्र मानते हैं। (6)

भोज अपने ग्रन्थ सरस्वती कण्ठामरण में प्रहेलिका को ''पहेली–बुझोवल'' कहते हैं। उनकी पहेली की परिभाषा विश्वनाथ जैसी ही हैं। आचार्य सोमेश्वर पहेली की परिभाषा इस प्रकार करते हैं –

**iPNR;dk onR;dk] r=kKku ijkHkoA d;kr igfydk ØhMk] rFkk iKk foo/k;AA**

एक पहेली पूछता है, दूसरा उत्तर देता है। जो उत्तर नहीं दे पाता हे वह पराजित होता है। इस प्रकार पहेली क्रीड़ा अर्थात् मनोरंजन का साधन होने के साथ बुद्विवर्धक भी होती है। (7)

वृहद् अंग्रेजी–हिन्दी कोश के अनुसार पहेली शब्द कूट प्रश्न, हस्त कूट, गूढ़, प्रहेलिका, बुझोवल, रहस्यमय बात, रहस्य पूर्ण तथ्य, पेचीदी बात, रहस्यपूर्ण उक्ति एवं उलझाने बाली चीज आदि का वाचक हैं। (8)

संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर में पहेली को परिभाषित करते हुए लिखा है किसी वस्तु या विषय का ऐसा वर्णन जो दूसरी वस्तु या विषय का वर्णन जान पड़े और बहुत सोच–विचार के बाद असल या ठीक वस्तु या विषय पर घटाया जा सके। इस प्रकार घुमाव–फिराव की बात को पहेली कहते हैं। (9)

इस प्रकार पहेली का एक प्रमुख तत्व मनोविनोद भी है । एक उदाहरण इस प्रकार है –

**vVd pyh] eVd pyh] igu pyh >b;kA ,lh ifr dh ykMyh] p< pyh d/kb;kAA ¼ryokj½**

इस पहेली में अप्रस्तुत को पकड़ पाने के लिए बुद्वि, चातुर्य, रूपक की पकड़ और विषय–वस्तु का अध्ययन होना आवश्यक है। इस पहेली का उत्तर तलवार है। इसमें मनोरंजन के साथ बुद्वि–व्यायाम भी हैं।

महाकवि केशवदास ने कविप्रिया में पहेली का लक्षण इस प्रकार लिखा है–

**cjfu; oLr njk; tg] dkug ,d idkjA rklk dgr igfydk] dfody cf)fopkjAA**

छतीसगढ़ी लोक–साहित्य के अध्ययन क्रम में श्री दयाशंकर शुक्ल ने पहेली को इस प्रकार परिभाषित किया है –

'' पहेलियाँ जन साधारण की वे उक्तियाँ हैं, जिनके द्वारा बुद्धिविलास का आनन्द अथवा बुद्धि परीक्षा की जाती है।'' (10) मानव मात्र अपने ज्ञानवर्धन, बौद्धिक विकास तथा मनोरंजन के लिए चिर–परिचित वस्तुओं के बारे में अपने कथन को जब लयात्मक, रहस्यात्मक अथवा प्रश्नात्मक रूप में कहता है और उसका उत्तर किसी अन्य व्यक्ति से पूछता है तब पहेली की सृष्टि होती है। लोक–साहित्य की अमूल्य निधि इन पहेलियों में जहाँ एक ओर तो श्रोताओं को रिझाने का आकर्षक गुण होता है, वहीं दूसरी ओर पहेलियाँ उन्हें छकाती भी है और चमत्कृत भी करती हैं। मन और बुद्धि पर सीधे प्रभाव डालना इनकी सहज विशेषता हैं।

इस प्रकार पहेलियाँ केवल लोक की बुद्धि मापक ही नहीं अपितु ये लोकरंजन का महत्वपूर्ण साधन भी हैं लोकरंजन की अद्भुत क्षमता के कारण ये एक प्रकार से मोहन किंवा वशीकरण का काम करती हैं। पहेलियों की पहिली चोट गुदगुदी भी पैदा करती हैं और शिर से लेकर पाँव तक हमारी शिराओं को झनझना भी देती हैं। पहेलियां के आसव को पीकर अच्छे–अच्छे श्रोता मदिरा का आनन्द और कुनेन की कड़वाहट का साथ–साथ अनुभव करते हैं।

लोकमानस की बुद्धि, कल्पना, संस्कृति और मनोरंजन की परिचायिका ये पहेलियाँ प्रायः समस्त प्रदेशों में, गाम्यांचलों में अपने पूर्ण वैभव के साथ फैली हुई हैं। प्रत्यूष वेला से लेकर रात्रि के प्रथम प्रहर तक जीतोड़ मेहनत करने बाला कृषक, मजदूर एवं ग्राम्य समाज आज भी थकान दूर करने और मनोरंजन के साधन के रूप में और वास्तव में जीवन जीने की कोशिश में अवकाश के कुछ क्षणों का सदुपयोग करने के लिए इन पहेलियों का आश्रय ग्रहण करता हैं।

पहेली शब्द की उत्पत्ति यद्यपि प्रहेलिका शब्द से हुई है किन्तु वैदिक काल से लेकर आज तक उसे कई अन्य नामों से भी अभिहित किया जाता हैं। कुछ विद्वान पहेली का विभाजन दो प्रकार से करते हैं जिन्हें अन्तर्लापिका और बहिर्लापिका कहा जाता है। बहिर्लापिका में पहेली का उत्तर बाहर से खोजा जाता है जबकि अन्तर्लापिका में उत्तर पहेली के अन्दर ही छिपा रहता है। बहिर्लापिका का उदाहरण निम्नलिखित है –

***ipHkrk u ikpkyh] f}ftgok u p lfi.khA d".ke[kh u r ektkjh] ;% tkukfr l if.Mr% AA ¼y[kuh½***

इस पहेली का हिन्दी भावानुवाद इस प्रकार है –

***dkjk ek cnjk uk gk;] nk tho ukfxu uk gk;A ipirh nkirh u gk;] tk tku lk ifMr gk;AA***

अन्तर्लापिका का उदाहरण है–

***dk dk'kh dk eFkjk] dk 'khry ckfguh xxkA d- l t?kku d".k] d cycUr u ck/kr 'khreAA***

अर्थर्ववेद की पहेलियों को आझियासेन्या कहा गया हैं।

ऐतरेय ब्राह्मण में पहेली को 'वाचकूटम्' कहा गया है। यदि क्षेत्रीय दृष्टि से विचार किया जाय तो पहेली को गुजराती में उखानूं, बघेली में किहानी, बुन्देली में पहेली या बुझौवल, प्राकृत में गाहा, नैपाली में बुझौवल या बूझ, भोजपुरी में बैठावक, गौड़ी में करसाल, उर्दू में इल्मे मजलिस जैसे नामों से पुकारा जाता है। पावरी भाषा में पहेली को सुडवणेन बाणी कहते हैं, छत्तीसगढ़ के विभिन्न भागों में पहेली को धंधा, हाना, कहिनी, कथा, काहरा, जनौवल एवं बुझौवल भी कहा जाता है।

छत्तीसगढ़ में आज भी पहेलियों का अनुष्ठानिक प्रयोग विवाह आदि के अवसर पर किया जाता हैं।

महाभारत की पहेली शुद्ध साहित्यिक है। भावशतक की पहेलियाँ श्रंगार प्रधान हैं। यजुर्वेद में कई ब्रह्मोद्य मिलते हैं, जिनमें होता अध्वर्यु से पहेली इस प्रकार पूछता है–

***d% fLondkdh pjfr] d% fLoTtk;r iu%A fd fLor fgeL; Hk"kt] fdEokoiu egrAA***

इसका उत्तर है –

***l;% ,dkdh pjfr] pUnek tk;r iu%A vfXufgeL; Hk"kt] Hkfejkoiu egrAA***

सूर्य अकेले चलाता है, चन्द्रमा बार–बार जन्म लेता है, शीत की औषधि अग्नि है और पृथ्वी अन्न का पात्र हैं।

महाभारत के वनपर्व में यज्ञ–युधिष्ठिर संवाद बुझौवल पहेली की श्रेणी में आता है जिसमें यक्ष कई जटिल प्रश्न पूछता है और युधिष्ठिर उनका सटीक उत्तर देते हैं।

पाली के महाउम्मग्ग जातक में लगभग दस–बारह पहेलियाँ हैं। पार्श्वनार्थ चरित तथा हरिभद्रसूरित कृत धूर्तारव्यान में भी पहेलियाँ प्राप्त होती हैं। जैनों के उत्तरण्झायंण (उत्तराध्ययन) सूत्र में ब्राह्मण और जैन भिक्षु का वार्तालाप पहेली की ही श्रेणी में आता है। पहेली के तत्वज्ञान मूलक उपयोग की इस परम्परा का सिद्धों की सान्ध्य भाषा और सन्तों की उलटबाँसी के रूप में विकास हुआ है। उलटबाँसी अपने मूल रूप में गूढ़ और वैचित्र्यमूलक विषय–वस्तु की प्रकृत अभिव्यक्ति है। कबीर की उलटबाँसियों में पहेली का यह रूप बड़ा मोहक और सुगम होकर जन–सामान्य तक पहुंचा था जैसे –

***fcu pjuu d nl fnfl /kko] fcu ykpu tx l>A llk lk myfV fl/k dk xkl] bg vpjt dkÅ c>AA***

इन उलटबाँसियों में आध्यात्मिक रूपक होता था। कबीर शब्दों के जादूगर थे। अपढ़ किन्तु अनुभवी एवं ज्ञानी थे। साधारण जन को उनकी अपनी बोली में वे समझाते हैं –

***,d lgkfxfu txr fi;kjhA lxj tho& tUr dh ukjhAA***

अमीर खुसरों की हिन्दवी में लिखी पहेलियाँ, मुकरियाँ, गीत, दोहें, गजल आदि उस काल की संस्कृति और जीवन में मूल्यों, अनुभूतियों, संवेदनाओं, दैनिक कार्य व्यापारों तथा तत्कालीन अन्य प्रवृत्तियों को व्यक्त करने में समर्थ हैं। खुसरों ने भारतीय मौसम, इतिहास, भूगोल, पृथ्वी, पशु–पक्षी, पेड़–पौधों, फूल, रीतिरिवाज, बुद्धि, ज्ञान आदि विषयों पर मुकरियाँ लिखी हैं । अपने गुरू औलिया मुइनुद्दीन चिश्ती के निधन काल में खुसरों द्वारा लिखित निम्न पंक्तियाँ उल्लेखनीय हैं –

***xkjh lk;h lt ij] e[k ij Mkj d lA py [kljk ?kj vkiu] ju Hkb pg nlAA***

एक पहेली में उन्होंने तीन भाषाओं में आईने का (दर्पण) नाम लिखा है–

***Qkjlh ckyh vkbu uk ¼vkbuk½ rdh ckyh ikb uk ¼Qkbuk½***
***fgUnh ckyh vkjlh vko ¼vkjlh½ dg [kljk dkb crykoAA***

खुसरों ने खलिकबारी, बूझ–अनबूझ पहेलियाँ, कहमुकरियाँ, दो सूखने, गजल एवं हिन्दी के दोहे आदि की रचना की है। हिन्दी में खुसरों की पहेलियाँ दो प्रकार की है– कुछ में तो वर्णित वस्तुओं को छिपाकर रखा गया है जो तत्काल स्पष्ट नहीं होता है। कुछ में बूझ वस्तु उनमें नही दी गई हैं। दोनों उदाहरण इस प्रकार हैं –

***ckyk Fkk tc lcdk Hkk;k c<k gvk dN dke u vk;kA***
***[kl jk dg fn;k m l dk uko vFk djk ukfg NkMk xkoAA ¼fn;k½***
***,d Fkky ekrh l Hkjk lcd flj ij vk/kk /kjkA***
***pkjk vkj og Fkkyh fQj ekrh m l l ,d u fxjAA ¼vkdk'k½***

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने भी मुकरियों की रचना की है। एक मुकरी में निम्न व्यंग दर्शनीय हैं –

***Hkhrj& Hkhrj lc jl pl gfl&gfl d ru eu /ku el A***
***tkfgj ckru e vfr rt dk lfjo lktu l ugh vxtAA***

अंग्रेजी तथा अन्य विदेशी भाषाओं में भी पहेली रचना परम्परा रही है। अंग्रेजी में पहेली की रिडिल, ग्रीक में एनिग्मा तथा जर्मन में राथसेल कहा जाता है। इनमें अलंकारों के माध्यम से वास्तविक का अर्थ छिपाया जाता है। पहेली रचना यूनानियों का प्रिय विषय था। ग्यारहवीं शताब्दी के सेलस, वासिलस, मेगालेमितिस तथा औलिकालामस आदि यूनानी कवियों ने केवल पहेलियाँ ही लिखी थी। मध्यकाल के आंग्ल लेटिन कवियों ने छन्दवद्ध पहेलियों की रचना की थी। पहेली तैयार करना हिब्रू कविता की भी एक विशेषता थी। इंग्लेण्ड में स्विफ्ट नें स्याही, कलम, पंखे जैसे विषयों पर पहेली रचना की हैं। बाद में शिलेर जैस कवियों ने पहेली निर्माण कलात्मक एवं साहित्यिक सौन्दर्य लाकर इन्हें मनोहर रूप प्रदान किया। फारसी में पहेली की चीस्तां कहते हें। ईरान में इसका प्रचलन था। चीनी भाषा में पहेली के दो रूप हैं में यू (वस्तुओं की पहेली) और जू में (शब्दो की पहेली)।

चीन में पिएन लियाड्0 नामक नगर में पहेली रचना के कई सम्प्रदाय थे और हाड्.चाव नामक स्थान पर पहेलियों पर गोष्ठियों में विचार–विमर्श होता था। मध्य एशिया में पहेली रचना का सर्वाधिक विकास अरब में हुआ। इसका सबसे बड़ा आचार्य अलहरीरी (ग्यारहवीं सदी) था। अन्य प्रमुख पहेली रचना कार इबन सुक्कारा (900 ई0) इबन शाबिन (1200 ई0) अबू शरफ्ती (1100 ई0) और कारदोवा के अबू ताहिर मोहम्मद इब यूसोफ हैं। स्प्रेन के यहूदियों ने इस कला को उत्कर्ष तक पहुँचाया । यहूदी पहेलीकारों में दुनाशवेन लबरात, मोसेस इब्न ऐजरा, येहूदा हलेबी और इम्मामानुअल बेन सोलोमन जेकुथिएल के नाम उल्लेखनीय है। ग्रीक भाषा में तो इनकी परम्परा प्राचीन थी ही, लेटिन के सिमफोसियस की पहेलियाँ पूरे यूरोप को प्रभावित करती रही हैं।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विश्व जीवन का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है जहाँ पहेली विद्यमान न हों।

## lnHk xFk lph&


1. शब्द कल्यद्रुम – तृतीय भाग – सं. राधाकान्त देव
2. काण्यादर्श – दण्डी – परिच्छेद 3 श्लोक 98–106
3. विष्णु धर्मोन्तर पुराण – सं. प्रियबालाशाह – (3–16–1,2)
4. सहित्य दर्पण – विश्वनाथ – (10, 13)
5. अमकोश – 1–6–6 – (चौखम्भा – 2034)
6. काव्यालंकार – भामह – 2–19
7. मानसोल्लास – सोमेश्वर – 5–11– 535
8. वृहद् हिन्दी अंग्रेजी कोश – हरदेव बाहरी– खण्ड 2 पृष्ठ 1584–85
9. संक्षिप्त हिन्दी शब्द सागर – नागरीय प्रचारिणी सभा काशी–सं. रामचन्द्र वर्मा
10. हिन्दी का लोक साहित्य– 2 – श्री दयाशंकर शुक्ल
11. गूमर – दी पापूलर बेलेड
12. ए. गुगुशविली – रेशल प्रोवर्ब्स
13. डॉ. चेपियन – रेशियल प्रोवर्ब्स की भूमिका
14. सत्येन्द्र – ब्रजलोक साहित्य का अध्ययन